INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

राजेन्द्र यादव के उपन्यासो में नारी विमर्श
(Feminism in Rajendra Yadav's Novels)

प्रा. पटेल शर्मिलाबहन सुमंतराय
श्री. रंगनवचेतन महिला आर्ट्स कालेज वालीया,
ता. वालीया, जि. भरुच.

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/02.2023-13334226/IRJHIS2302014

प्रस्तावना :

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री का प्रवेश एवं उसका योगदान अपनी एक अलग पहचान बनाता है। हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में नारी जीवन को पर्याप्त रुप में अभिव्यक्ति प्रदान की जा रही हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासो में अनेक उपन्यासकारों ने नारी जीवन की संवेदनाओं को उजागर करने का प्रयत्न किया है। वर्तमान युग में स्त्री और के संबंधो में एक तरह का बदलाव आया और इस बदलाव के साथ कई नई समस्यायों का भी निर्माण हुआ। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई, और नारी भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही थी। परंतु पश्चिमी जीवन का अनुकरण, आर्थिक दबाव, गहरी जीवन की चमक–दमक का अनुकरण, टूटते परिवार की यातना से नारी के जीवन में कई प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हुई है, जिसके परिणाम स्वरुप स्त्री– पुरुष के संबंधो में विच्छेद हो रहा है। इन बिगडते संबंधो के माध्यम से नारी पात्रों की संवेदनाओं को व्यक्त करने का प्रयास हिन्दी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में किया है।

नारी वर्ग को हमेंशा दासी, पैर की जूती, घर की उपभोक्ता सामग्री, संतानोत्पति की मशीन माना गया है। राजेन्द्र यादवने नारी के प्रति पुरुष वर्ग की हीन भावना को निम्न संकेतों व शब्दों में उकेरा है कि ...''नैतिकता–अनैतिकता, लील–अश्लील, चरित्र–धर्म सभी के केन्द्र में तो तुम हो– तुम हमारे धर की रानी और शोभा हो। तुम हमारी नाक हो, तुम हमारी मान–मर्यादा हो, तुम हमारी इज्जत हो– जो तुम पर बुरी नजर डालता है वह हमारी और उससे भी अधिक तुम्हारी इज्जत लूटता है और इसी इज्जत के लिए हमनें हत्याएँ की है, खून की नदियाँ बहाई है। अब तुम कहती रहो कि यह अमानवीय, नृशंस और पैशाचिक है मगर यह सच है कि हम उसे माफ करते है जो इज्जत लूटती है। दूसरों की जुठी या उपभोग की हुई औरत हमारे किसी काम की नहीं । यह धर्म है और धर्म उसी की रक्षा

करता है जो धर्म की रक्षा करते हैं। इसी धर्म की रक्षा के लिए हम दुश्मनों की इज्जत लूटते है, उनकी औरतों को चींथडे– फाडते है, उनकी हत्याएँ करते है। धार्मिक हिंसा या अत्याचार ही सबसे बडा पुण्य है..........इसीलिए हमने तुम्हें सती कहकर जलाया है, जौहरो में झोंका है ताकि हमारे बाद कोई दूसरा तुम्हारा उपयोग न कर सके, हमनें तुम्हे चुडैल और डायन बताकर इसीलिए तो मारा है ताकि हमारे नियंत्रण से बाहर तुम देवतांओ या अशरीरी आत्माओं की सवारी न बन सको। हम तुम्हारे सचमुच अहसानमंद है कि तुमने मीरा और पद्मिनी बनकर आध्यात्मिक और शारीरिक आत्महत्याएँ कर ली, सीता के रूप में कुएँ या खाई में छलाँग लगा ली और हमें कहने का अवसर मिल गया कि तुम ब्रह्म में लीन हो गई या धरती में समा गई।''

राजेन्द्र यादव के सात उपन्यास 'सारा आकाश'(1952), 'उखडे हुए लोग'(1956), 'कुलटा'1957 'शह और मात'(1959), 'एक इंच मुस्कान' –मन्नू भंडारी के साथ (1961), 'अनदेखे अनजान पुल'(1963), 'मंत्रविद्ध'(1961) के सभी स्त्री पात्र धर्म, समाज और पुरुष द्वारा पीडित है। 'सारा आकाश' की मुन्नी, प्रभा, 'कुलटा' की मिसेज तेजपाल, 'अनदेखे अन्जान पुल' की निन्नी, 'एक इंच मुस्कान' की रंजना, 'शह और मात' की रश्मि, सुजाता, 'मंत्रविद्ध' की इन्दु, सुरजीत, 'उखडे हुए लोग' उपन्यास की जया, पद्मा किसी न किसी प्रकार से समाज, धर्म या पुरुषों द्वारा सताई हुई है। 'सारा आकाश' उपन्यास की मुन्नी ससुरालवालों के अत्याचारों से तंग आकर मायके चली आती है तो उसके दु:ख से उसके अम्मा–बाबूजी अत्यंत दु:खी होते है, परंतु अपनी बहू प्रभा पर वे अनेक अत्याचार करते रहते है। वे नहीं सोचते की प्रभा भी किसी की बेटी है। प्रभा अपने मायके से रुपये, जेवर, अच्छे कपडे नहीं लाई थी अत: वे हंमेशा उसे टोकते रहते है। प्रभा की दुर्गति के पीछे उसकी सास और जेठानी का ही हाथ है। मनलायक दहेज न मिलने के कारण सास प्रभा से नाराज है तो उसकी शिक्षा और सुंदरता के कारण जेठानी के मन में उसके प्रति ईर्ष्या उत्पन्न होती है। खाना बनाने में अकुशल साबित करने हेतु जेठानी प्रभा द्वारा बनाई दाल में चुपके से मुट्ठीभर नमक डाल देती है। सारे धार में प्रभा की खाना बनाने की अकुशलता चर्चा का विषय बन जाता है। प्रभा खाना बनाना नहीं जानती यह बात सबके सामने साबित होती है, इससे जेठानी को मन ही मन संतो ा होता है, और वह ताना कसती है – ''बडी चली थी स्विटवाच पहनकर खाना बनाने। बोलो, धडी का तुम चुल्हे में करोगी क्या ? या तो फैशन ही कर लो, या काम ही कर लो ! अरे पहली बार तो ठीक से बनाकर खिला देती।''

नारी जीवन का सबसे बडा दुर्भाग्य तब आरंभ होता है कि जब पति उसका त्याग करता है। समाज ही नहीं बल्कि परिवार भी रुढिवादी होने के कारण परित्यक्ता को आजीवन अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाने के सिवा और कोई चारा नहीं होता। परंतु आधुनिक काल में शिक्षा की देन के फलस्वरुप नई पीढी परंपरागत मान्यताओं का त्याग कर साहस और आत्मविश्वास से नई जिंदगी तलाशने लगी है। 'एक इंच मुस्कान' की ाकुन एक परित्यक्ता

नारी है। जब पति उसका त्याग करता है तो रुढिवादी माता–पिता उसे अपने यहाँ आश्रय नहीं देते। ाकुन संगीत का स्कूल खोलकर बडे साहस से जिंदगी का सामना करती है। अमर ाकुन के इस साहस पूर्ण जीवन को देखकर कहता है– ''माँ–बाप ने परित्यकता बेटी का मुँह देखने से इन्कार कर दिया पर यह कैसे आत्मविश्वास और साहस से जिंदगी का सामना करती चली जा रही है। ाकुन परिश्रम, साहस एवं आत्मविश्वास के बल पर सुख–चैन और आत्मसम्मान की जिंदगी जीती है।

वर्तमान शिक्षा की यह बहुत बडी उपलब्धि है कि हर क्षेत्र में नौकरी करके नारी अपने परिवार का भरण पो ाण करने लगी है। नारी का यह रुप उसकी क्षमता का परिचायक है। लेकिन पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था की नारी का यह रुप एक ओर सराहनीय तो दूसरी ओर शोचनीय लगने लगा है। एक ओर वह चाहता है कि नारी नौकरी करे, धर की देखभाल करे, किन्तु दूसरी ओर इससे वह अपना आत्मसम्मान आहत पाता है। पत्नी का नौकरी करना और धर खर्च चलाना निकम्मे पति के अहं को बरदाश्त नहीं होता। 'एक इंच मुस्कान' के अमर की पत्नी रंजना नौकरी करती है और धर की देखभाल भी। अमर लेखक है नौकरी करनेवाली स्त्री की समस्या को लेकर लिखी गयी एक कहानी वह पत्नी रंजना को बताता है जिसके उत्तर में रंजना उसे कहती है ''आप चाहते है कि पत्नी नौकरी तो करे ही, साथ साथ धर की देखभाल करे, नौकर से सिर मारे, कपडे सँभाले, बटन लगाए, बच्चे खिलाए, फिर पति की पूरी पूरी सेवा भी करे – उसका चौका–चूल्हा करे, हाथ पाँव दबाएँ– फिर भी पति की यही शिकायत कि न वह पति को देखती है, न धर को। इतना ही नहीं पति को सारी छूट है,– वह दुनिया भर की खुराफते करे, मटरगस्ती करें, दोस्तों में धूमें अपने पर चाहे जितना खर्च करे।'' रंजना आगे अमर को निकम्मे पति चड्ढा और उसकी कमाने वाली पत्नी रतन की कहानी सुनाती है तो अमर को यह लगता है कि वह कहानी उसे खास उद्श्य से सुनाई गई है। रंजना जब स्कूल पढाने के लिए चली जाती है तो अमर सोचता है कि ''मेरा काम धर पर बैठकर काम करने का है और रंजना का स्कूल में जाकर पढाने का ....इसकी जडे या परिणतियाँ और भी गहराई में है 'मेरी हेसियत है पति की और कार्य पत्नी का'। इससे स्पट है कि पत्नी के नौकरी करने से पति का अहं आहत हो जाता है।

स्त्री और पुरुष के मिलन से दाम्पत्य जीवन की शुरुआत होती है। सुखी दाम्पत्य जीवन की कुंजी है पति–पत्नी में सांमजस्य, मेल, संतुलन, सच्चा प्रेम और एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना। इसके अभाव में दाम्पत्य जीवन अशांत और दु:खी बन जाता है। 'सारा आकाश' उपन्यास का नायक अमर है, कम उम्र में उसकी शादी हो जाती है, जिसके कारण उसमें समझदारी का अभाव है। वह पत्नी को अपनी प्रगति में बाधा समझता है, और वह प्रभा से न बोलने का निश्चय करता है। प्रभा सारा दिन काम करती है और सास–ससुर, जेठ–जेठानी, देवर आदि की जली कुटी सुनकर दु:खमय जीवन बिताती है। परंतु प्रभा के दु:ख को देखकर अमर को सुख होता है। ''अमर उसकी पिटाई भी करता है, गाली देता है

और धर से निकल जाने को कहता है ''—— हरामजादी यहाॅ रहना है तो ठीक से रहो। नहीं तो जहाॅ जगह दीखे अभी चली जाओ।''

परस्त्री के साथ पति का अनैतिक संबंध से भी स्त्री का दाम्पत्य जीवन दुःखदायक बन जाता है। 'सारा आकाश' की मुन्नी के दुःखी दाम्पत्य जीवन का कारण यही है। उसके पति का चाल चलन अच्छा नहीं है। वह ब्राभण स्त्री के साथ अनैतिक संबंध रखाता है। रातों बहार ही रहता है। जब सास की मृत्यु होती है तो मुन्नी पर पहाड टूट पडता है। अब उसके पति को कहनेवाला कोई नहीं है। वह उस ब्राह्मणी रखेल को धर में ही ला रखाता है। मुन्नी से नौकरानी की तरह सेवा कराता है। उसका पति उसे दो—दो तीन—तीन दिन भूखी रखाता है, उसे बेंत से पिटता भी है। जब मुन्नी से यह सहन नहीं होता तो वह मायके चली जाती है। कुछ दिन के बाद उसका पति उसे लेने आता है, और अपने किए पर अफसोस प्रकट करता है। परंतु मुन्नी उसके साथ जाने के लिए तैयार नहीं है। वह रोती है और अपने पिता से कहती है —— ''बाबूजी, तुम मुझे अपने हाथों से जहर देकर मर डालो, मेरा गला धोंट दो,— मुझे वहाॅ मत भेजो — — मैं तुम्हारे आगे हाथ जोडती हूॅ, पाॅव पडती हूॅ — — मुझे कहीं मत भेजो। फिर भी उसकी बात कोई नहीं सुनता और उसे पति के साथ भेज दिया जाता है। अंत में पति उसकी हत्या कर देता है।

'मंत्रविद्ध' उपन्यास की इन्दु का पति मोहन भी विवाह के बाद पूर्णिमा से प्रेम करने लगता है तो इन्दु का जीवन दुःखमय बन जाता है। इन्दु अपने पति का परस्त्री से अनैतिक संबंध सह नहीं सकती। उपन्यास का नायक तारक विवाहित व्यक्ति है। वह अपनी छात्रा सुरजीत को अपनी हवस और वासना का शिकार बनाता है, प्रेम संबंधो की आड में, सुरजीत को वह इमोशनली ब्लेकमेल करते हुए उसके पिता से संपत्ति सहयोग और सुरक्षा हांसिल करना चाहता है।

'उखडे हुए लोग' उपन्यास की जया शरद से प्रेम करती है परंतु दोनों के प्रेम के बीच जाति और धर्म आता है। सामाजिक परिवेश से ये उखडे हुए है। इसलिए प्रेमी युगल समाज से भागकर विवाह करने के लिए बाध्य हो जाते है। यहाँ जया के दांपत्य जीवन में आयी समस्या का मूल कारण समाज है। समाज और रूठि के कारण जया घुटन का अनुभव करती है। उसका जीवन संधर्षमय बन जाता है। 'उखडे हुए लोग' उपन्यास की पद्मा भी युवती है, संगीत में पारंगत, माता की व्यभिचारी वृति से विक्षुब्ध है, उसे वह सह नहीं पाती परंतु सहने को बाध्य है, जिस नेता भैया ने उसे गोद खिलाया था, उसकी वासना का शिकार बनने से पहले पद्मा 'स्वदेश महल की छत से कूद जाती है।

पद्मा पठी लिखी थी, माॅ को त्याग कर अपने पैरों पर खडी हो सकती थी, अपनी कुंठित आत्मा का उदात्तीकरण द्वारा या कोई और दिशा अपना सकती थी, पर उसकी समस्या का पर्यवसान सतीत्व रक्षा करने के प्रयत्न में आत्महत्या के रुप में होता है।

संयुक्त परिवार प्रथा भारतीय समाज की अपनी अलग पहचान है। लेकिन आधुनिक काल में शिक्षा, विज्ञान का प्रसार, औद्योगिकीकरण तथा आर्थिक स्थिति में परिवर्तन नवीन द्वि टकोण के कारण संयुक्त परिवार प्रथा का विधटन हुआ। सुंयुक्त परिवार में वैयक्तिक आशा आकांक्षाओं का गला धोट दिया जाता है और उसमें सबसे ज्यादा सहन अगर किसी को करना पडता है तो परिवार की बहू को। 'सारा आकाश' उपन्यास की प्रभा को इससे बहुत काफी सहन करना पडता है। संयुक्त परिवार के कारण वह अपने पति से संवादिता नहीं स्थापित कर पाती, उसे सास–ससुर देवर जेठ, जेठानी के अत्याचार सहन कर, नौकरानी की तरह दिन–रात काम करना पडता है। अपने पति सहित पूरे परिवार में उपेक्षा की जाती है। फलतः वह दमधाटू जिंदगी जीने को विवश हो जाती है। संयुक्त परिवार में देवरानी जेठानी के बीच झगडे भी होते हैं जिससे परिवार का वातावरण अशांत बन जाता है। 'एक इंच मुस्कान' की मंदा को भी हर दिन अपनी जेठानी से परेशान होना पडता है। हद वहाँ पर होती है कि उसका पति टंडन भी अपनी पत्नि को समझता नहीं और उसे ही दोि ात ठहराते हुए अमर से कहता है – तुझे तो पता ही है, इन्हीं मेम साहिबा के लिए मैं भैया से लडकर आया हूँ भाभी से इनकी एक मिनट नहीं पटती ।

'कुलटा' उपन्यास में ऐसी नारी की दर्दभरी समस्या हे जो पति को सह नहीं पाती, जो उसके क्षुधित मातृत्व को तृप्त नहीं कर सका। मिसेज तेजपाल उच्छृखंल है, स्वच्छंद है, अराजक है, वर्जनाओं को नहीं मानते है। पति के साथ उसका कोई बौध्दिक तान–मेल भी नहीं था। अपनी दमित और अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति के लिए वह तलाक का कानूनी आधार स्वीकार न कर चूपचाप धर छोडकर वायोलिन वादक के साथ फरार हो जाती है। जो उसकी यौन पिपासा ही है, कारण है मेजर तेजपाल का पौरुषहीन होना। मेजर तेजपाल नपुंसकता का आरोप बर्दाश्त नहीं कर पाता ओर सिनिसिज्म का शिकार हो जाता है। मिसेज तेजपाल पर 'कुलटा' होने का आरोप लगाता है, पर क्या एक स्त्री को अपने स्वतंत्रता का हक नहीं है? नपुंसक पति के साथ समायोजित न हो पाने के कारण वह लांछित होती है।

नारी अधिकार और नारी शिक्षा के व्याप से वर्तमान समय में नारियों के जीवन में बदलाव जरूर आया है, परंतु समाज, रूठि, परंपरा, पुरुष प्रधानसमाज के संस्कारगत जडत्व से नारी आज भी मुक्त नहीं हुई।

संदर्भ ग्रांथसूचिः

1 आधार ग्रांथः

सारा आकाश..... राजेन्द्र यादव

उखडे हुए लोग ...वही

कुलटा.... वही

अनदेखो अनजान पूल..... वही

एक इंच मुस्कान..... वही

मंत्रविद्व.... वही

2 सहायक ग्रंथ:

1 डॉ तलवार स्वर्ण कान्ता, हिन्दी उपन्यास और नारी समस्यायें.....

2 डॉ सिरसट सोनिया, राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक विवेचन....

3 डॉ चौहाण अर्जुन, राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन...

4 डॉ गिरधारी राधा, राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज....